द्वितीय समसत्र

द्वितीय समसत्र में हिंदी साहित्य के इतिहास का ही रीतिकालीन साहित्य और इतिहास तथा काव्य शास्त्र से संबंधित विषय वस्तु को का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए दिया गया है ।

Core-3

रीतिकाल के अंतर्गत विद्यार्थी हिंदी साहित्य के रीतिकाल के नामकरण , उस समय की परिस्थितियां, इस काल की काव्य की प्रवृत्तियां आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त करते हैं। इसके साथ-साथ इस काल में किस तरह की व्यवस्था समाज में थी , राज्य में थी और धर्म का स्वरूप क्या था । इसकी भी जानकारी बच्चों को प्राप्त होती है । इस काल में कौन कौन से प्रमुख कवि थे? उन्होंने किस प्रकार की काव्य रचना की है ? उनकी काव्य की विषय वस्तु किस प्रकार थी? आदि से जुड़ी विस्तृत जानकारी बच्चों को प्राप्त होती है। इसके साथ साथ उस समय हिंदी साहित्य में किस प्रकार की भाषा को अपनाया जा रहा था । इसके बारे में भी विद्यार्थियों को पता चलता है

Core-4

चौथे पत्र में काव्य शास्त्र से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों को दी जाती है । काव्य लक्षण क्या है ? काव्य क्या है? काव्य लिखने का उद्देश्य क्या है? काव्य लिखने के लिए कौन कौन से कारक अनिवार्य है ? शब्दों में कितनी शक्तियां होती है? काव्य में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? कौन से विशेषताएं काव्य की में दोष उत्पन्न करते हैं? रस क्या है? काव्य का साधारणीकरण किस प्रकार होता है ?काव्य में छंदों का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? छंद के कितने भेद हैं? उनके लक्षण क्या-क्या है? अलंकार क्या है ?उसके क्या लक्षण है ?अलंकार कितने प्रकार के होते हैं ?विविध अलंकारों के लक्षण आदि से संबंधित विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को दिया जाता है । इसके द्वारा विद्यार्थी को काव्य पढ़ने में रुचि जागृत की जाती है । काव्य के विविध तत्व को समझाया जाता है ।और काव्य लिखने की प्रवृत्ति भी उनमें जागृत की जाती है।

द्वितीय समसत्र

द्वितीय समसत्र में हिंदी साहित्य के इतिहास का ही रीतिकालीन साहित्य और इतिहास तथा काव्य शास्त्र से संबंधित विषय वस्तु को का अध्ययन विद्यार्थियों के लिए दिया गया है ।

Core-3

रीतिकाल के अंतर्गत विद्यार्थी हिंदी साहित्य के रीतिकाल के नामकरण , उस समय की परिस्थितियां, इस काल की काव्य की प्रवृत्तियां आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त करते हैं। इसके साथ-साथ इस काल में किस तरह की व्यवस्था समाज में थी , राज्य में थी और धर्म का स्वरूप क्या था । इसकी भी जानकारी बच्चों को प्राप्त होती है । इस काल में कौन कौन से प्रमुख कवि थे? उन्होंने किस प्रकार की काव्य रचना की है ? उनकी काव्य की विषय वस्तु किस प्रकार थी? आदि से जुड़ी विस्तृत जानकारी बच्चों को प्राप्त होती है। इसके साथ साथ उस समय हिंदी साहित्य में किस प्रकार की भाषा को अपनाया जा रहा था । इसके बारे में भी विद्यार्थियों को पता चलता है

Core-4

चौथे पत्र में काव्य शास्त्र से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों को दी जाती है । काव्य लक्षण क्या है ? काव्य क्या है? काव्य लिखने का उद्देश्य क्या है? काव्य लिखने के लिए कौन कौन से कारक अनिवार्य है ? शब्दों में कितनी शक्तियां होती है? काव्य में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? कौन से विशेषताएं काव्य की में दोष उत्पन्न करते हैं? रस क्या है? काव्य का साधारणीकरण किस प्रकार होता है ?काव्य में छंदों का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? छंद के कितने भेद हैं? उनके लक्षण क्या-क्या है? अलंकार क्या है ?उसके क्या लक्षण है ?अलंकार कितने प्रकार के होते हैं ?विविध अलंकारों के लक्षण आदि से संबंधित विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को दिया जाता है । इसके द्वारा विद्यार्थी को काव्य पढ़ने में रुचि जागृत की जाती है । काव्य के विविध तत्व को समझाया जाता है ।और काव्य लिखने की प्रवृत्ति भी उनमें जागृत की जाती है।